शोध

स्कूलों में सैन्यीकरण[1]

पायल यादव

स्कूलों की दिनचर्या बच्चों को क्या सिखा रही हैं? अनुशासन के नाम पर स्कूलों में क्या हो रहा है? किस तरह की भाषा के प्रयोग को स्कूल बढ़ावा दे रहे हैं? शिक्षक एवं बच्चों के बीच किस तरह अन्तःक्रिया होती है? और उन सबके योग से स्कूल किस तरह के व्यक्तित्वों का निर्माण कर रहे हैं? यह लघु शोध प्रार्थना सभा के उदाहरण के माध्यम से स्कूल की संस्कृति एवं माहौल को समझने की एक कोशिश करता है।

भूमिका

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा : 2005 में स्कूल के माहौल को पाठ्यचर्या के एक पहलू की तरह देखा गया है क्योंकि यह बच्चों को शिक्षा के उद्देश्यों और सीखने की युक्तियों के लिए तैयार करता है (i- xi)। इस कथन के शैक्षणिक निहितार्थ हैं कि पाठ्यचर्या के उद्देश्य केवल तभी हासिल किए जा सकते हैं जब स्कूल में विद्यार्थियों को सकारात्मक माहौल मिले। मिल्स (1959) के अनुसार माहौल एक व्यक्ति का उसकी परिस्थितियों एवं परिवेश से संबंध होता है। इस संबंध को जीने में व्यक्ति कुछ प्रवृत्तियां अपना लेता है। इन प्रवृत्तियों से विभिन्न संस्थाओं एवं अन्य व्यक्तियों का नियमन होता रहता है। संस्थाओं में परिवार, पड़ोस, धर्म, जाति, लिंगभाव एवं स्कूल शामिल होते हैं। माहौल प्रवृत्तियों का नियमन करता है जिससे व्यक्तियों के विचार एवं व्यवहार में समानता आ जाती है।

समाज विशेष से संबंधित व्यवहार प्रतिमान, आर्थिक, भौगोलिक घटक मिलकर उस समाज का माहौल निर्मित करते हैं। संस्कृति के अन्दर ही माहौल जन्म लेता है। संस्कृति एक विस्तृत संकल्पना है। यह एक माध्यम की तरह होती है जिसके द्वारा व्यक्ति आपसी अंतःक्रिया करते हैं। माहौल संस्कृति के द्वारा निर्मित होने वाला एक वातावरणीय आयाम है।

''संस्कृति में प्रकृति और मानव, समाज और मानव एवं अदृश्य जगत और मानव की शक्तियों के सभी अंतःसंबंध आते हैं। मानव का अंतर्जगत-विचार, विवेक, व्यक्तिगत मूल्य, ऊर्जा की अभिव्यक्ति भी संस्कृति का अंग होता है'' (दुबे 1996-81)। ''संस्कृति किसी एक समाज में पाई जाने वाली उच्चतम मूल्यों की वह चेतना है, जो सामाजिक प्रथाओं, व्यक्तियों की चित्रवृत्तियों, भावनाओं, मनोवृत्तियों, आचरण के साथ-साथ, उसके द्वारा भौतिक पदार्थों को विशिष्ट स्वरूप दिए जाने में अभिव्यक्त होती है''(हुसैन, 1987-3)। विलियम्स (1958) ने संस्कृति की आम अवधारणा को चुनौती दी है कि वह कुछ विशिष्ट लक्षणों से बनती है। इसके स्थान पर उन्होंने संस्कृति को 'सामान्य' माना है। उनके अनुसार- संस्कृति 'सामान्य' है। संस्कृति के अंतर्निहित तत्व जुड़ते रहते हैं व संदर्भ, समय के अनुरूप आकार पाते हैं।

एक संस्कृति में मौजूद विभिन्न माहौलों का अध्ययन करके यह समझा जा सकता है कि व्यक्तियों में किस तरह की प्रवृत्तियां विकसित हो रही हैं। माहौल की इस समझ पर आधारित एक

लेखक परिचय

सामाजिक विज्ञान की शिक्षिका हैं। स्कूली संस्कृति के विभिन्न आयामों पर शोध कर रही हैं।

शोध दिल्ली के तीन स्कूलों में किया गया। इस शोध का उद्देश्य स्कूल की संस्कृति की अवधारणा को उसके माहौल का अध्ययन करने के लिए प्रयोग करना था। जिससे यह समझने का मौका मिले कि विद्यार्थियों को उस माहौल में कौनसी प्रवृत्तियां अपनाने का मौका मिल रहा है।

स्कूल की संस्कृति की संकल्पना गहन एवं सूक्ष्म है। यह स्कूल की संस्था में रची-बसी होती है। स्कूल की संस्कृति का तात्पर्य वे मूलभूत मूल्य एवं नियमित हो चुके व्यवहार हैं, जो उस स्कूल का आधार होते हैं तथा विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से प्रकट होते हैं। प्रस्तुत शोध के अंतर्गत विद्यालय की संस्कृति को किसी विशेष तत्व के रूप मे नहीं बल्कि विलियम्स (1958) द्वारा बताई गई, 'सामान्य' संकल्पना के रूप में अभिव्यक्त किया गया है। स्कूल की संस्कृति को जानना एक सीधा-सरल कार्य नहीं है।

स्कूल की संस्कृति को दो स्तरों के आधार पर समझा जा सकता है। पहला स्तर है, शाब्दिक या लिखित स्तर। इस स्तर पर स्कूल के प्रत्यक्ष पक्षों के आधार पर मौटे तौर पर स्कूल की संस्कृति को जान सकते हैं। परंतु संस्कृति की संकल्पना वास्तव में एक अंतःक्रियात्मक संकल्पना है। संस्कृति शब्द एक वस्तुनिष्ठ यथार्थ नहीं है बल्कि इसका अर्थ संदर्भ एवं समय से जुड़ा हुआ है। इसलिए लिखित स्रोतों के माध्यम से स्कूल की संस्कृति की समझ विकसित करना अधिक विश्वसनीय नहीं है। साथ ही इससे स्कूल की संस्कृति की एक भ्रामक तस्वीर भी उभर सकती है। इसलिए स्कूल की संस्कृति को समझने का एक दूसरा स्तर भी है। यह है व्यवहारिक स्तर। इस स्तर पर व्यवहारिक क्रियाओं के अवलोकन द्वारा स्कूल की संस्कृति को समझा जा सकता है।

माहौल का अर्थ है किसी गतिविधि विशेष के दौरान बनने वाला परिवेश जो अध्यापकों, विद्यार्थियों आदि की आपसी अंतःक्रियाओं से निर्देशित है। स्कूल की संस्कृति और माहौल का जो अर्थ इस शोध में प्रयोग हुआ है, उसे एक उदाहरण की सहायता से बेहतर तरीके से समझा जा सकता है। मान लीजिए, मैं स्कूल की दिनचर्या को समझने के लिए कुछ गतिविधि स्थलों का अवलोकन करती हूं। जैसे मिड डे मील वितरण के दौरान स्कूल का परिवेश, आधी छुट्टी के समय स्कूल का परिवेश, किसी समारोह के दिन का परिवेश आदि।

ये परिवेश स्कूल में अलग-अलग प्रकार का माहौल रचते हैं। इन विविध माहौलों का सम्मिलित रूप ही स्कूल की संस्कृति का निर्माण करता है। इस शोध में स्कूल के एक गतिविधि स्थल- 'प्रार्थना सभा' के माहौल का अध्ययन करके स्कूल की संस्कृति की संकल्पना को कुछ गहनता एवं सूक्ष्मता से समझने का प्रयास किया गया।

शोध के उद्देश्य

इस शोध के तीन प्रमुख उद्देश्य थे। पहला, स्कूल के संदर्भ में संस्कृति की संकल्पना को समझना। दूसरा, चुने गए स्कूलों में नियमित रूप से होने वाली गतिविधियों में से एक, प्रार्थना सभा, की गतिविधि के स्वरूप का विश्लेषण करना और इसके संदर्भ में स्कूल की संस्कृति की पड़ताल करना। तीसरा, प्रार्थना सभा से स्कूल की संस्कृति से संबंधित मुद्दों को समझना। शोध के लिए चुने गए स्कूल इस प्रकार थे।

स्कूल I केंद्रीय सरकार द्वारा संचालित सरकारी स्कूल
स्कूल II राज्य सरकार द्वारा संचालित सरकारी स्कूल
स्कूल III एक ईसाई धार्मिक परिषद् द्वारा संचालित निजी स्कूल

प्रार्थना सभा के गतिविधि स्थल के अवलोकनों के आधार पर प्राप्त कुछ मुख्य बिंदुओं को चिह्नित किया गया। ये सभी बिंदु प्रार्थना सभा के स्थल को माहौल के रूप में विवेचित करते थे। उपरोक्त तीनों स्कूलों में किए गए अवलोकनों को व्यवस्थित रूप से देखने के बाद, चुने हुए बिंदुओं के इर्द-गिर्द रखकर स्कूल की संस्कृति के संदर्भ में प्रार्थना-सभा के माहौल को समझने का प्रयास किया गया। ये विषय-बिंदु अवलोकनों से ही निकाले गए जो विश्लेषण का आधार बने।

विश्लेषण

प्रार्थना सभा का सांचा

स्कूल की संस्कृति के संदर्भ में प्रार्थना सभा का एक निश्चित सांचा होता है। तीनों स्कूलों में प्रार्थना सभा के एक निश्चित स्वरूप का अनुसरण किया जाता था। स्कूल I में गतिविधियां निश्चित थीं तथा विभिन्न कार्यक्रमों का क्रम भी तय था। गाए जाने वाले गीत, वंदना, राष्ट्र गान के बाद 'जय-हिन्द' के नारे और सलामी इसके प्रत्यक्ष रूपाकार थे। प्रार्थना सभा का यह सांचा धीरे-धीरे विद्यार्थियों को तैयार करता था कि वे आदेश या याद दिलाए बिना इन व्यवहारों के आदी हो जाएं अर्थात् ये क्रियाएं उनके व्यवहार में रच-बस जाएं। बौर्दयु की शब्दावली में कहें तो ये क्रियाएं हैबिट्स बना रही थीं।

स्कूल II में भी पंक्तियों का स्थान, गाए जाने वाले गीत, प्रार्थना, गतिविधियों का स्वरूप, आदि निश्चित था। पी.टी. (शारीरिक प्रशिक्षण) के दौरान निश्चित मुद्राएं, पूर्व निर्धारित थीं जो प्रार्थना सभा के सांचे का एक अच्छा उदाहरण थीं। स्कूल III में सभी कक्षाओं में स्पीकर लगे हैं। इंटरकॉम[२] के माइक का नियंत्रण प्रधानाचार्य के कमरे में है। यहां से कुछ विद्यार्थी प्रार्थना करते हैं तथा उनके पीछे-पीछे बोलकर शेष विद्यार्थी अपनी-अपनी कक्षाओं में प्रार्थना करते है। इंटरकॉम की सहायता से कक्षाओं के अंदर प्रार्थना होना तथा अंग्रेजी में अभिवादन के विभिन्न निश्चित तरीके (जैसे- गुड मॉर्निंग टीचर्स एंड माई डियर फ्रेंड्स..., ऑल द बैस्ट एंड हैव ए नाइस डे...) आदि प्रार्थना सभा की एक निश्चित रूपरेखा के प्रतीक थे।

समग्र रूप में कहा जाए तो प्रार्थना सभा का कार्यक्रम एक निश्चित खाके में तैयार होता था और फिर उसी के अनुरूप निष्पादित होता था। निश्चित उपकरण जैसे सीटी, ड्रम आदि का प्रयोग, निश्चित मुद्राएं बनाना, निश्चित तरीके से व्यवहार करना आदि निरंतर इस सांचे को और अधिक सुदृढ़ बनाते थे।

प्रार्थना सभा में निहित नीतिपरक तत्व

प्रार्थना सभा विद्यार्थियों को व्यवहारों के एक निश्चित व्यवहार प्रतिमान के लिए तैयार करती थी। इसे समझने के लिए दुर्खाइम (1961) के नैतिक शिक्षा के दृष्टिकोण को सैद्धांतिक आधार के तौर पर प्रयोग किया जा सकता है। दुर्खाइम के अनुसार नैतिकता एक सामाजिक परिघटना है जिसके तीन तत्व है- 'अनुशासन', 'सामाजिक समूह से लगाव' एवं 'स्वायत्ता'। अनुशासन का संबंध चरित्र व व्यक्तित्व निर्माण से है। सामाजिक समूह से लगाव का अर्थ है नैतिक रूप से समूह के साथ कार्य करना। स्वायत्ता का संबंध तार्किक नैतिकता से होता है, जब व्यक्ति को कार्य का कारण एवं अर्थ पूर्णतः पता हो। नैतिकता समाज की जरूरतों एवं संरचनाओं से जुड़ी संकल्पना है। दुर्खाइम शिक्षा को भी सामाजिक परिघटना मानते हैं जिसके अंतर्गत युवा पीढ़ी का सामाजीकरण सम्मिलित है। आधुनिक समाज में नवीन सामाजिक व्यवस्था 'जैविक एकजुटता' पर आधारित है जो धार्मिक एवं परंपरागत नैतिकता से भिन्न है। स्कूलों में निश्चित रीति-रिवाजों, मूल्यों के द्वारा 'यांत्रिक एकजुटता' विकसित करने का प्रयास किया जाता है। दुर्खाइम इसे जरूरी मानते हैं अन्यथा सहमति के आधार पर निर्मित समाज में बिखराव हो सकता है। बचपन के संस्कारों में 'यांत्रिक एकजुटता' डाली जाती है। इसे उत्पन्न करने वाली प्रक्रिया 'शिक्षा' है जो स्कूल नामक संस्था द्वारा निष्पादित होती है।

दुर्खाइम की नैतिक शिक्षा के दो प्रारंभिक तत्व (अनुशासन एवं सामाजिक समूह से लगाव) तो प्रार्थना सभा में प्रतिबिंबित होते थे लेकिन तीनों स्कूलों में किए गए शोध से मुख्य प्रश्न उठता है कि क्या इन स्कूलों में निर्मित माहौल स्वायत्ता की सीमा के अवसर विद्यार्थियों को देता था?

प्रार्थना सभा के परिदृश्य में लय में एक ऊंची आवाज के साथ अपनी आवाज मिलाकर गाना, निश्चित मुद्राएं बनाना,

धुनों के अनुरूप क्रिया आदि, 'यांत्रिक एकजुटता' को दर्शाते थे। स्कूल में प्रार्थना के दौरान निश्चित पंक्तियों में खड़े होना, झंडे के सामने गाना, 'जय हिन्द' के नारे लगाना आदि दर्शाते थे कि स्कूल में निश्चित अनुष्ठानों पर बल था। यह बिंदु दर्शाते थे कि प्रार्थना सभा जो स्कूल दिनचर्या में 'सामान्य' गतिविधि होती है, एक दृढ़ प्रयोजन कर रही थी।

अनुशासन

प्रार्थना सभा विद्यार्थियों को अनुशासित करने के एक प्रयोजन के रूप में कार्य करती थी। स्कूल-I व स्कूल-II में प्रार्थना स्कूल के मैदान में होती थी। यहां अनुशासन का अर्थ था-

सीधी एवं सही स्थान पर पंक्तियां बनाना, सावधान-विश्राम, सीटी के अनुरूप व्यवहार करना, सभी पंक्तियों के विद्यार्थियों के साथ आवाज से आवाज मिलाकर गाना।

दूसरी ओर इंटरकॉम की सहायता से कक्षाओं के अंदर होने वाली प्रार्थना का स्वरूप विद्यार्थियों में अलग प्रकार का अनुशासन बनाता था। इंटरकॉम पर बोले गए निर्देशों को ध्यान से सुनना, डेस्कों पर चुपचाप बैठे रहना, इंटरकॉम पर सुनकर बोले जाने पर 'गुड मॉर्निंग टीचर्स एंड माई डियर फ्रेंड्स..., ऑल द बैस्ट एंड हैव ए नाइस डे' कहकर सभी का अभिवादन करना, निर्देश मिलने पर डायरी का निश्चित पृष्ठ खोलकर गाना आदि इस अनुशासन प्रक्रिया के तत्व थे।

प्रार्थना सभा के स्थान का भौतिक ढांचा

स्कूल-I व स्कूल-II में प्रार्थना सभा के लिए एक निश्चित मंच था। मंच का विश्लेषण किया जाए तो यह मंच और उसके नीचे का चबूतरा एक सम स्तर को नहीं अपितु ऊपर से नीचे की ओर आदेश प्रवाह और सत्ता को सांकेतिक तौर पर दर्शाते थे। प्रयुक्त किए जाने वाले ड्रम, तबला, हारमोनियम आदि भौतिक सामग्री की सहायता से विद्यार्थियों को सामूहिक-व्यवहार करने के लिए प्रेरित करना, प्रार्थना सभा को एक विशिष्ट माहौल दे रहा था। एक ऐसा माहौल जहां विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं व्यक्तिगत व्यवहार के लिए कोई स्थान नहीं था। स्कूल-I में प्रार्थना सभा के स्थल पर निगरानी हेतु कैमरे भी लगे थे।

स्कूल-III में विद्यार्थियों की प्रार्थना उनकी कक्षाओं में होती थी। संपूर्ण प्रार्थना के दौरान विद्यार्थियों को डेस्कों पर बैठकर प्रार्थना गानी होती थी। केवल राष्ट्र गान के दौरान वे अपने-अपने स्थानों पर खड़े होते थे। डेस्कों पर बैठे विद्यार्थी शारीरिक गतिविधियों से जुड़े हुए नहीं होते। स्कूल का भौतिक ढांचा स्कूल की संस्कृति में माहौल निर्मित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। स्कूलों में चबूतरों, पार्क, आदि की सरंचना एवं इनका आकार अत्यंत सुदृढ़ एवं नियंत्रित था। प्रार्थना सभा का यह भौतिक ढांचा शारीरिक रूप से असक्षम विद्यार्थियों के परिप्रेक्ष्य से भी उचित नहीं था। प्रश्न यह उठता है कि क्या इस प्रकार निर्मित माहौल विद्यार्थियों को स्वतंत्र अभिव्यक्ति के अवसर देता है? इस तरह की युक्तियां शिक्षार्थियों में स्व-अनुशासन विकसित कर पाएंगी?

भाषा का स्वरूप

तीनों ही स्कूलों में प्रार्थना सभा के दौरान विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए भाषा के यांत्रिक पक्षों का प्रयोग होता था। जैसे, हैव ए नाइस डे, गुड मॉर्निंग, ऑल द बैस्ट, कॉग्रेचुलेशनूस आदि। इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग विद्यार्थियों को स्कूल के माहौल में एक प्रकार की स्वीकृति प्रदान करता था तथा 'यांत्रिक-एकजुटता' को विद्यार्थियों में और अधिक सुदृढ़ करता था। यांत्रिक एवं मानक भाषा प्रयोग करने की परंपरा का यह ढांचा उस समय कमजोर पड़ता था जब अध्यापकों की नजर विद्यार्थियों से हट जाती थी। उस समय विद्यार्थियों को अपनी इच्छानुसार बात करने, अपनी मर्जी से बोलने (जैसे- एक-दूसरे को मकड़ी, बैंगन आदि नामों से बुलाना, ट्रम्प कॉर्ड आदि से संबंधित अनुभव बांटना) का अवसर मिलता था।

अध्यापक की भूमिका

प्रार्थना सभा के माहौल में अध्यापक की भूमिका विद्यार्थियों के लिए अनुशासन का एक सांचा तैयार करने की थी। एक ऐसा सांचा जो स्कूल की व्यवस्था को प्रभावी तरीके से संचालित करता रहे। अनुशासन व्यक्तिगत भिन्नता वाले विभिन्न शरीरों, मानसों को सामूहिकता प्रदान कर रहा था। इस सामूहिकता में सृजनात्मकता एवं व्यक्तिगत क्षमता के लिए कोई स्थान नहीं था। जैसे-जैसे विद्यार्थी छोटी से बड़ी कक्षाओं की तरफ प्रगति करते हैं वैसे-वैसे और अधिक अनुशासित होते जाते हैं एवं निश्चित व्यवहारों को आत्मसात कर लेते हैं। कुमार (2001) ने अनुशासन की इस प्रक्रिया को सैन्यीकरण की संज्ञा दी है। यह एक प्रकार का सैन्यीकरण ही है जो विद्यार्थियों को पंक्तिबद्धता को थोड़ा भी भंग किए बगैर चलना, चुप रहकर केवल कहे अनुसार एवं केवल आदेशों का पालन करते हुए बोलना, लय-ताल में गाना, समूह के साथ मिलकर गाना आदि सिखाता है। प्रार्थना सभा के दौरान विद्यार्थियों का समूह जितनी एकता के साथ नारे लगाता एवं पैरों को जमीन पर मारता उतनी ही गौरवपूर्ण बात स्कूल के अध्यापकों के लिए होती थी।

विवेचना के तौर पर हम इसे जे. कृष्णमूर्ति के शिक्षा दर्शन से समझ सकते हैं। कृष्णमूर्ति (2011) ने शिक्षा प्रणाली को गंभीर चुनौती देते हुए कहा हैः हम शिक्षक ही यदि स्वयं को गहराई से नहीं समझते और विद्यार्थियों को केवल जानकारियों से भरने एवं परीक्षाएं पास करवाने में लगे रहते हैं, तो हम कैसे एक नए ढंग की शिक्षा ला सकेंगे? यदि मार्गदर्शक स्वयं ही भ्रांत हो, संकीर्ण हो, राष्ट्रवादी तथा मतांध हो तो स्वभाविक है कि उसका शिष्य भी वैसा ही होगा। उस अवस्था में शिक्षा और भी अधिक भ्रांति एवं कलह का कारण बनेगी... सबसे पहले स्वयं को नए सिरे से शिक्षित करने की चिंता करना बच्चे के भविष्य के कल्याण और उसकी सुरक्षा की चिंता से कहीं अधिक जरूरी है... (पृ. 76)। कृष्णमूर्ति के उद्धरण से यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान शिक्षा पद्धति में अध्यापक की भूमिका तथा जो भूमिका कृष्णमूर्ति बताते हैं दोनों में गहरा अंतर्विरोध है।

विद्यार्थियों की भूमिका

विद्यार्थियों की भूमिका ऐसी इकाई के रूप में थी जिसे व्यवहार, शरीर, भाषा आदि सभी पक्षों से स्कूल के अनुशासित माहौल के अनुरूप स्वयं को ढालना था। स्कूल-I में सीटी की आवाज सुनकर विद्यार्थियों द्वारा खेल छोड़कर आना तथा स्कूल-III में प्रार्थना के दौरान आंखें बंद किए हुए विद्यार्थियों द्वारा बीच-बीच में आंख खोलकर अध्यापक की ओर देखना जैसे दृष्टांत दर्शाते थे कि स्कूल में विद्यार्थियों की भूमिका स्कूल के अनुशासन मानकों से निर्देशित थी। स्कूल-III में कक्षा IV के 4 विद्यार्थी (3 लड़कियां एवं 1 लड़का) प्रार्थना सभा के गायन-समूह में थे। प्रार्थना के दौरान वे प्रतिदिन विभिन्न कक्षाओं (जिनको दायित्व जाता था) के साथ वंदना गाते थे। प्रार्थना शुरू होने से पहले ये 4 विद्यार्थी खेलते नहीं थे। अपितु सिस्टर के कमरे के दरवाजे के बाहर खड़े रहते थे और जैसे ही प्रार्थना की घंटी बजती थी, कमरे के अंदर चले जाते थे। जब ये विद्यार्थी कमरे के बाहर खड़े होते थे तो इनके खड़े होने की स्थितियों में एक प्रकार का तनाव दिखाई देता था। ये आपस में बात करते हुए निरंतर कमरे के दरवाजे की तरफ देखते रहते थे कि कब इन्हें अंदर आने के आदेश मिले। विद्यार्थियों का कमरे में बुलाने की प्रतिक्षा में बाहर खड़े होने का तरीका बंधे हुए व्यवहार एवं स्कूल के माहौल में निहित तनाव को प्रतिबिंबित करता था।

अध्यापकों और विद्यार्थियों के संबंधों में निहित अंतःक्रिया

प्रार्थना सभा का माहौल स्कूल में संबंध प्रतिमान भी तय करता था। स्कूल-I में संपूर्ण स्कूल की प्रार्थना साथ होती थी तथा शुक्रवार व शनिवार के दिन प्राथमिक विभाग के विद्यार्थी प्रार्थना सभा के कार्यक्रम का नियोजन करते थे। इस प्रकार इस स्तर के विद्यार्थियों को भी स्कूल की मुख्य प्रार्थना सभा में भागीदारी व अभिव्यक्ति के अवसर मिलते थे। लेकिन यह अभिव्यक्ति आत्म-अभिव्यक्ति नहीं अपितु अपेक्षित अभिव्यक्ति थी। यह अभिव्यक्ति उस सांचे में ही बन रही थी जिसका वर्णन पहले किया जा चुका है। अर्थात् अभिव्यक्ति अवसरों की अभिव्यक्ति नहीं अपितु

प्रायोजित अभिव्यक्ति थी। स्कूल-II में इस प्रकार का कोई अवसर प्राथमिक कक्षा के विद्यार्थियों को नहीं मिलता था। जब गणतंत्र दिवस या अन्य किसी कार्यक्रम के दौरान गतिविधि करवानी होती थी तब पूरे प्राथमिक विभाग की ओर से एक-दो कार्यक्रम तैयार करवाकर पेश करवा दिए जाते थे। स्कूल-III में प्रार्थना कक्षाओं के भीतर होती थी। ऐसे माहौल में भागीदारी भी निर्धारित ढांचे के अंतर्गत कार्य कर रही थी। विद्यार्थियों की अंतःक्रिया इस रूप में सुनिश्चित की गई थी कि वे इंटरकॉम की आवाज सुनकर उसके अनुरूप क्रिया करें। यानी अंतःक्रिया का स्वरूप भी निर्धारित था।

समग्र तौर पर यदि देखा जाए तो प्रार्थना सभा की गतिविधि के द्वारा प्रत्येक स्कूल में एक विशिष्ट प्रकार का माहौल बन रहा था। तीनों ही स्कूलों में मुख्यतः एक द्वार का प्रयोग आने-जाने के लिए होता था। स्कूल की चार दीवारी में यदि यह द्वार बंद कर दिया जाए तो सभी विद्यार्थियों को आसानी से स्कूल में प्रवेश करने या बाहर जाने से रोका जा सकता था। यहां स्कूल में समाज की एक प्रमुख संस्था 'जेल' का प्रारूप प्रयुक्त हो रहा था। इसी प्रकार आने जाने का निर्धारित समय वृहत समाज के 'फैक्टरी मॉडल' से मिलता-जुलता था। इन संस्थाओं की छाया, जो स्कूल पर पड़ी थी वह इसकी इमारत को एक विशिष्ट माहौल में ढाल रही थी। इस पूरे माहौल का उद्देश्य नियंत्रण के जरिए आत्म-नियंत्रण सिखाना था। नियंत्रण और आत्म-नियंत्रण दोनों के मध्य निरंतर द्वंद बना हुआ था लेकिन नियंत्रण, आत्म-नियंत्रण पर हावी रहता था।

निष्कर्ष

वर्तमान शैक्षिक संदर्भ में यह जरूरी समझा गया है कि विद्यार्थी के अनुभव एवं समझ को पाठ्यचर्या में स्थान दिया जाए। प्रार्थना सभा प्रायः सभी स्कूलों में होती है तथा इसकी घंटी से संपूर्ण दिनचर्या की शुरुआत होती है। शोध के दौरान मैंने पाया कि इस पहली गतिविधि से ही स्कूल में घुटन एवं भय पैदा कर दिया जाता है। इस शोध को करने के बाद मुझे लगता है कि शिक्षण प्रशिक्षण के दौरान पढ़ाए जाने वाले प्रगतिशील दार्शनिकों जैसे जे. कृष्णमूर्ति, गांधी, टैगार, इत्यादि के विचारों के आलोक में स्कूल की संस्कृति को समझने की जरूरत है। शोध के आधार पर स्कूल की संस्कृति का जो रूप निकलकर आया है वह इन दार्शनिकों द्वारा संकल्पित स्कूल की संस्कृति से मेल नहीं खाता है।

प्रार्थना सभा के दौरान बनने वाला माहौल विद्यार्थियों एवं अध्यापकों के मध्य तनाव ही दर्शाता है। प्रार्थना सभा का माहौल विद्यार्थियों को एक निश्चित सांचे में ढालकर उनके शरीर एवं क्रियाओं को नियंत्रित करता है। यह बाहरी नियंत्रण विद्यार्थियों के मानस एवं क्रियाओं को सामूहिकता देता है।। यहां से यह भी स्पष्ट होता है कि क्यों कृष्णमूर्ति स्वनियंत्रण एवं भयमुक्त वातावरण के पक्षधर हैं। नियंत्रण के इसी बिंदु की वे आलोचना करते हैं।

स्कूल के माहौल में वास्तविकता में अत्यधिक तनाव एवं नियंत्रण है। नियमबद्धता एवं संरचनागत तरीके से व्यवहार करने का दबाव विद्यार्थियों के शरीर एवं मानस को आकर दे रहा है तथा उनकी सृजनात्मकता को क्षीण कर रहा है। नीतिगत परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो इस बिंदु पर विचार करना आवश्यक है कि स्कूल के वातावरण को तनावमुक्त कैसे बनाया जाए ताकि विद्यार्थियों को स्वतंत्र चिंतन के अवसर प्राप्त हो सकें। प्रस्तुत शोध से स्कूलों के जिस माहौल का पता चलता है, उस परिदृश्य में ऐसा वातावरण बनाना बड़ा ही चुनौतिपूर्ण है।

यह अध्ययन एक छोटा अध्ययन है जो बहुत ही सीमित समय में तीनों स्कूलों में किया गया है लेकिन इस अध्ययन से प्राप्त परिणामों से यह अंदाजा आसानी से लगाया जा सकता है कि अगर स्कूल के जीवन के तमाम अलग-अलग आयामों पर शोध किया जाए तो बहुत से महत्त्वपूर्ण बिंदु, स्कूल की संस्कृति को चिह्नित करने के लिए निकल सकते हैं। प्रस्तुत शोध से प्राप्त जानकारी हमें यह समझने में सहायता करती है कि शिक्षा के उद्देश्य किस प्रकार की स्कूल की संस्कृति की मांग करते हैं।

प्रस्तुत शोध में विश्लेषण तथा विभिन्न संकल्पनाओं को समझाने हेतु अलग-अलग स्थानों पर सैद्धांतिक पक्षों जैसे दुर्खाइम, स्टैनहाउस, विलियम्स आदि के विचारों को आधार के रूप में इस्तेमाल किया गया है। आगे आने वाले शोध कार्यो में इस पक्ष को आधार बनाकर शोध विकसित किए जा सकते हैं। स्कूल में होने वाली अन्य गतिविधियों जैसे विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों, घटनाओं आदि को आधार बनाकर स्कूल की संस्कृति को और अधिक बेहतर रूप से समझा जा सकता है। अवलोकन के औजारों के साथ-साथ अध्यापकों, विद्यार्थियों के द्वारा दी गई सूचनाओं को शोध में और अधिक स्थान देकर अधिक वृहत स्तर पर शोध किया जा सकता है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखाः 2005 के अनुसार शैक्षिक लक्ष्य स्कूलों व अन्य शैक्षिक संस्थानों द्वारा चलाई जा रही विभिन्न गतिविधियों को एक रचनात्मक सांचे में ढालकर उन्हें 'शैक्षिक' होने का विशिष्ट चरित्र प्रदान करते हैं, (पृ. 11)। साथ ही शिक्षा के लक्ष्य विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास की बात करते है। परंतु प्रस्तुत शोध के द्वारा जिस प्रकार का माहौल विद्यार्थियों को मिल रहा है, उस परिदृश्य में ये उद्देश्य पूरे हो सकते हैं? यह एक गहरा सवाल है।

क्या ये उद्देश्य ऐसे माहौल में पूरे हो सकते हैं जहां सुबह से ही इतना तनाव एवं नियंत्रण हो? इसलिए यह कहा जा सकता है कि वर्तमान स्कूलों में विद्यार्थियों को उपलब्ध होने वाला माहौल शिक्षा के विशिष्ट उद्देश्यों से मेल नहीं खाता है। इस शोध से यह बिंदु सामने आता है कि यदि हमें शिक्षा के विशिष्ट उद्देश्यों को प्राप्त करना है तो ये उद्देश्य केवल पाठ्यपुस्तक, पाठ्यक्रम एवं परीक्षा प्रणाली में सुधार से प्राप्त नहीं हो सकते। इनकी प्राप्ति के लिए एक ऐसे माहौल की जरूरत है जो सकारात्मक परिवेश, विद्यार्थियों को दे सके।

वर्तमान शिक्षा पद्धति के परिदृश्य में यह शोध गहरे सवाल खड़े करता है। क्या शिक्षा व्यवस्था में ऐसे विद्यार्थी विकसित हो सकते हैं जो स्व-निर्देशित हों? क्या स्कूल की संस्कृति विद्यार्थियों में खुद सोचने की क्षमता विकसित कर सकती है? प्रस्तुत शोध में केवल एक गतिविधि को स्कूल की संस्कृति के अध्ययन हेतु चुना गया है। इस एक गतिविधि से ही यह संकेत मिलता है कि स्कूल की संस्कृति कितनी जटिल एवं बहु-आयामी है, जो सूक्ष्म अध्ययन की मांग करती है। मात्र एक गतिविधि से स्कूल की संस्कृति के परिदृश्य में इतने गहरे एवं प्रासंगिक संकेत मिलते हैं। यदि हम स्कूल की संपूर्ण संस्कृति को समझने के लिए विभिन्न स्थलों एवं गतिविधियों के दौरान बनने वाले माहौल का अध्ययन करें तो हम स्कूल को और अधिक गहरे स्तर पर एक जीवित संस्था के रूप में समझकर उसकी विवेचना कर सकेंगे। परिणामस्वरूप नीतिगत उद्देश्यों के अनुरूप स्कूल की संस्कृति का पुनर्निर्माण कर सकेंगे। ◆

टिप्पणियां

1. यह शब्द कृष्ण कुमार की पुस्तक *'राज, समाज और शिक्षा'* से लिया गया है।
2. इस स्कूल में सभी कक्षाओं मे स्पीकर लगे है। इंटरकॉम के माइक का नियंत्रण प्रधानाचार्य के कमरे में है। यहां से कुछ विद्यार्थी प्रार्थना करते हैं तथा उनके पीछे-पीछे बोलकर शेष विद्यार्थी अपनी-अपनी कक्षाओं में प्रार्थना करते है।

संदर्भ

दुबे, एस. (1996) *समय और संस्कृति* (पृ.14, 81), नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन

हुसैन, एस. ए. (1994) *भारत की राष्ट्रीय संस्कृति,* नई दिल्ली : नेशनल बुक ट्रस्ट

स्टैनहाऊस, एल. (1967) *कल्चर एण्ड एजुकेशन,* लंदन : हैनिमन एजुकेशनल बुक्स लिमिटेड यू. के.

कुमार, के. (2001) *राज, समाज और शिक्षा* (पृ. 69-77, 103-123)। नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन

दुर्खाइम, ए. (1961) *मॉरल एजुकेशन* (पृ. 144-157). न्यूयॉर्क : द फ्री प्रेस यू. एस. ए.

कृष्णमूर्ति, जे. (2011) *शिक्षा एवं जीवन का तात्पर्य* (पृ. 1-35, 64-75), वाराणसी : कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया

विलियम्स, आर. (2002) *कल्चर इज आर्डिनरी. इन हाइमोर बी. (एड.). द एवरी डे लाइफ रीडर,* न्यू यार्क : रूटलेज पब्लिकेशन

मिल्स सी. डब्ल्यू. (1949) द *सोश्यॉलोजिकल इमैजिनेशन,* लंदन : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस